REACH Lilly MDR-TB Partnership Media Fellowship Programme

2011-12 FELLOW: AMARJEET PAL

Amarjeet Pal *is Sub-Editor at Amar Ujala in Meerut. He has previously been a recipient of the Vikas Samvaad Media Fellowship in Madhya Pradesh for reporting on child rights.*

"In the last five years the number of TB patients has increased 361% in Burhanpur… Around 3% of people from the areas of Khaknar, Dhoolkot, Shahpur and Dhedtalai in the district have left the treatment midway, though with encouragement from DOTS providers, some have restarted treatment…"

चिंतनीय ◆ 2006 में टीबी के मरीजों की संख्या 236 थी जो अब 2011 में बढ़कर हुई 851

अधिकांश मरीजों के बीच में दवा छोड़ने के कारण जिले में हुआ टीबी मरीजों का इजाफा

पांच साल में साढ़े तीन गुना हुए टीबी मरीज

अमरजीत पाल @ बुरहानपुर

burhanpur@patrika.com

बुरहानपुर में पिछले पांच वर्षों में टीबी (क्षय रोग) मरीजों की संख्या 361 फीसदी बढ़ी है। 2006 में यहां टीबी मरीजों की संख्या 236 थी, जो कि 2011 में 851 हो गई। इतना ही नहीं करीब 3 प्रतिशत ने इलाज भी नहीं पूरा किया और बीच में ही दवा छोड़ दी। हालांकि इस मामले में अधिकारियों का कहना है कि इन मरीजों ने इलाज फिर से शुरू कर दिया है।

टीबी अस्पताल के प्रभारी डॉ. हर्ष वर्मा कहना है कि पहले लोग छुआछूत व समाज में बदनामी के डर से जांच कराने ही नहीं आते थे। अस्पताल से मिली जानकारी से पता चला कि बीच में ही इलाज छोड़ने से मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ। डॉ. वर्मा ने बताया कि 90 प्रतिशत टीबी मरीजों को फेफड़े की टीबी है, जबकि दस प्रतिशत अन्य अंग में। उन्होंने बताया कि जिले के अधिकांश क्षेत्रों में पॉवरलूम से निकलने वाली धूल भी मरीजों के फेफड़ों को और अधिक प्रभावित करती है।

यहां छोड़ा था इलाज

जिले के खकनार, धूलकोट, शाहपुर व डेढ़तलाई आदि क्षेत्रों के करीब तीन प्रतिशत लोगों ने बीच में ही इलाज छोड़ दिया था, हालांकि डॉट्स प्रोवाइडर द्वारा प्रेरित किए जाने के बाद इन लोगों ने फिर से इलाज शुरू कर दिया है। मरीजों ने छुआछूत की धारणा के चलते अपना नाम या अन्य जानकारी बताने से मना कर दिया।

यहां हैं डॉट्स केंद्र

जिले में डॉट्स केंद्र शाहपुर, खकनार, नेपानगर, बोदरली, सिवल, धूलकोट व अमूल्ला में बनाया गया है।

क्या है डॉट्स

अधिकांश टीबी के मरीज किसी न किसी कारणवश कुछ दिन दवा लेकर इलाज छोड़ देते थे या नियमित दवा नहीं लेते थे। इसे रोकने के लिए जिला टीबी अस्पताल के अंतर्गत क्षेत्रों की जनसंख्या के अनुसार डॉट्स (डायरेक्ट ऑब्जर्वेशन ट्रीटमेंट सर्विस) केंद्र बनाए। इसकी शुरुआत 1997 में हुई थी। इसके तहत मरीज केंद्र आते हैं और डॉट्स प्रोवाइडर के सामने ही दवा खाते हैं। इसके अलावा जो केंद्र आना छोड़ देते हैं, उन्हें चिह्नित कर डॉट्स प्रोवाइडर घर जाकर दवा लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

इलाज छोड़ना है जानलेवा

विशेषज्ञों की मानें तो इसका इलाज शत प्रतिशत संभव है। सामान्य रोगियों के लिए इसकी अवधि छह से आठ माह तक की होती है। बीच में इलाज छोड़ने से साधारण टीबी एमडीआर-टीबी (मल्टी ड्रग रजिस्टेंस) का रूप ले लेती है। इसका इलाज दो साल तक चलता है। एमडीआर-टीबी साधारण टीबी का दूसरा जटिल रूप है। इसमें मरीजों की मौत तक हो जाती है।

बुरहानपुर का टीबी अस्पताल।

पिछले कुछ वर्षों की स्थिति

वर्ष	नतीजा
2006	236
2007	392
2008	429
2009	475
2011	851

टीबी अस्पताल में अंकित आंकड़ों के अनुसार

REACH

SPEAK UP TO STOP TB

the Lilly MDR-TB partnership